

बसोहली की चित्रकारी हमारी सांस्कृतिक अस्मिता से जुड़ी है। वे चित्र अपने युग के लोकाचार को दर्शाते हैं। इस असाधारण विरासत को संरक्षित करना हमारा धर्म है। बसोहली पश्मीना नाजुक बुनाई और कढ़ाई के कारण अतुलनीय है। यहां की रामलीला देश-दुनिया की पुरानी रामलीलाओं में एक है। 'बसोहली उत्सव' इन अव्यवों को स्मरण करने और कराने का जरिया है।

बसोहली उत्सव
18-23 अक्टूबर 2023



कठुआ जिले में स्थित बसोहली में कुछ सप्ताह पहले 'बसोहली उत्सव' आयोजित किया गया। यह जगह जम्मू से 150 किलोमीटर दूर है। इस उत्सव में स्थानीय कला, लोक नृत्य और पारंपरिक रामलीला का आयोजन हुआ।

– श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

(26 नवंबर 2023 **'मन की बात'**)
107वीं कड़ी

मन की बात 107
MANN KI BAAT 107

विश्वस्थलि
बसोहली, कठुआ, जम्मू और कश्मीर

@Basohliutsav2025 @Basohliutsav2025 @Basohliutsav2025



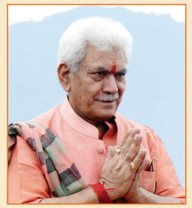
बसोहली उत्सव 2025

'बसोहली' भारत के इतिहास में एक छोटा सा राज्य रहा है, लेकिन इसकी सांस्कृतिक समृद्धि के क्या कहने हैं! भानुदत्त की रचना 'रसमंजरी' का पूरा चित्रांकन यहीं हुआ। ऐसे कई उदाहरण हैं, जिसने देश-दुनिया में बसोहली चित्रकला को प्रसिद्ध कर दिया। वही मकाम बसोहली पश्मीना को भी हासिल रहा है। लेकिन समय की मार से इनपर धूल की परतें जम गईं। जब से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारतीयों के मन-मस्तिष्क में स्व का भाव जागृत किया है, बसोहली के लोग अपनी संस्कृति और इतिहास को लेकर गौरवान्वित हैं। बसोहली चित्रकला की चमक लौट आई है।

उत्सव का ध्येय वाक्य

कला
संस्कृति
धरोहर

के प्रति गर्व का भाव जगाना है...



हमारे ऐतिहासिक गौरव के अनमोल हीरे और मोती बसोहली की जमीन पर बिखरे हुए हैं। इस स्थल का स्वर्णिम काल फिर से लौटे, इसकी कोशिश हम सभी को मिलकर करनी है।

– श्री मनोज सिन्हा
माननीय उपराज्यपाल
जम्मू-कश्मीर
(22 अक्टूबर, 2023)

बसोहली 2025 उत्सव

बसोहली अपने नाम से भी प्राचीन है। इसके गढ़ के भीतर ढेरों गुप्त खजाने छिपे हैं- जिसमें इतिहास भी है और उससे उपजी समृद्ध संस्कृति भी। यहां की कला और संस्कृति ऐसे शांत वातावरण में समृद्ध होती आई है, जहां समय ठहर जाता है। चारो तरफ हरियाली से लदी पहाड़ी के बीच जो इतिहास छुपा है, उसकी अबतक ठीक से पड़ताल नहीं हुई है। कोई इस हरे-भरे आवरण के भीतर झाँक कर देखेगा, तो उसे बसोहली की भव्यता अपनी विशिष्ट चमक के साथ दिखाई देगी।

यहां की शानो-शौकत न तो जम्मू के शाही वंश की कृपा से रही है। न मुगलों या किसी अन्य राजवंशों की बदौलत। इसकी अपनी कहानी है, जिसमें एक किस्म का अनूठापन है। कठोर पहाड़ी चट्टानों के बीच कोमलता है, जिसका आकर्षण रावी नदी दोगुना कर देती है। यहां रंगों का गजब संयोग है। उत्सुकता पैदा करने वाली लोक-कथाएं हैं। उत्तेजित भाव को शांत करने वाली आध्यात्मिकता है। पीले रंग की प्रमुखता है, जो दूर से ही राहगीरों को आकर्षित कर लेता है। पीला रंग आशावादी, चंचल और खुशमिजाजी का प्रतीक है। वहीं इसे बुद्धिमता से भी जोड़कर देखा जाता है। बसोहली चित्रकारी यहां की उत्कृष्ट कृतियां हैं, जो दर्शकों पर जादू कर देती है। इनके गहरे रंग में स्थायी आकर्षण है, जो सदियों से यथावत बना हुआ है।

जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वयं की खोज करने और अपनी कला-संस्कृति पर गर्व करने का नारा दिया तो बसोहसी का भी स्वयं जाग उठा। वैसे बसोहली का इतिहास एक राजधानी से गांव, फिर गांव से अर्ध-विकसित शहर बनने की दिलचस्प कथा है। लेकिन, दिलचस्प बात यह है कि बसोहली आज भी अपनी प्राचीनता की निशानियों को समेटे हुए है। इसका आकर्षण पहाड़ों की बदलती रूपरेखा और हवा की उग्रता में निहित है। रावी नदी के किनारे कतारों में उगते पेड़ और रंजीत सागर बांध इस शहर की खूबसूरती को बढ़ा देते हैं। पहाड़ियों पर रेंगते सूरज को शाम होते-होते पुरथू में झील पर अपनी छाया डालते हुए देखना किसी रहस्यमयी एहसास से कम नहीं है।

इनसब के बावजूद आश्चर्य की बात यह है कि जम्मू का यह क्षेत्र अबतक पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित नहीं हो पाया है। हालांकि, स्थानीय लोगों से रावी नदी पर जिस पुल का वादा पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने किया था, उसे मोदी सरकार ने 'अटल सेतु' का निर्माण कर पूरा कर दिया है। रावी नदी पर बने इस सुंदर पुल ने बसोहली तक की कठिन यात्रा आसान हो गई है। अब बसोहली को अपना खोया हुआ गौरव प्राप्त करना है। जम्मू



और कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने स्थानीय लोगों में यह ललक पैदा कर दी है। वर्ष 2023 में आयोजित 'बसोहली उत्सव' के उद्घाटन समारोह में माननीय उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा ने कहा था- "हमारे ऐतिहासिक गौरव के अनमोल हीरे और मोती यहां बिखरे हुए हैं। इस स्थल का स्वर्णिम काल पुन: लौटे, इसके लिए हम सभी को जरूरी प्रयास करने होंगे। इच्छाशक्ति दिखानी होगी।"

समय की धारा ने भले ही बसोहली को हाशिये पर ठेल रखा है। लेकिन रावी का बहाव एक बार फिर गति पकड़ने वाला है, जिससे शहर को एक नया जीवन मिलेगा। छोटे-छोटे संयुक्त प्रयास संभावनाओं को पैदा करेंगे और किसी भी रुकावटों के कोहरे को चीर देंगे, जिससे बसोहली में रोशनी लौट आएगी। 'बसोहली उत्सव' उन्हीं छोटे प्रयासों का नाम है।

बसोहली उत्सव

@Basohliutsav2025 @Basohliutsav2025 @Basohliutsav2025